# जंगल मीटिंग

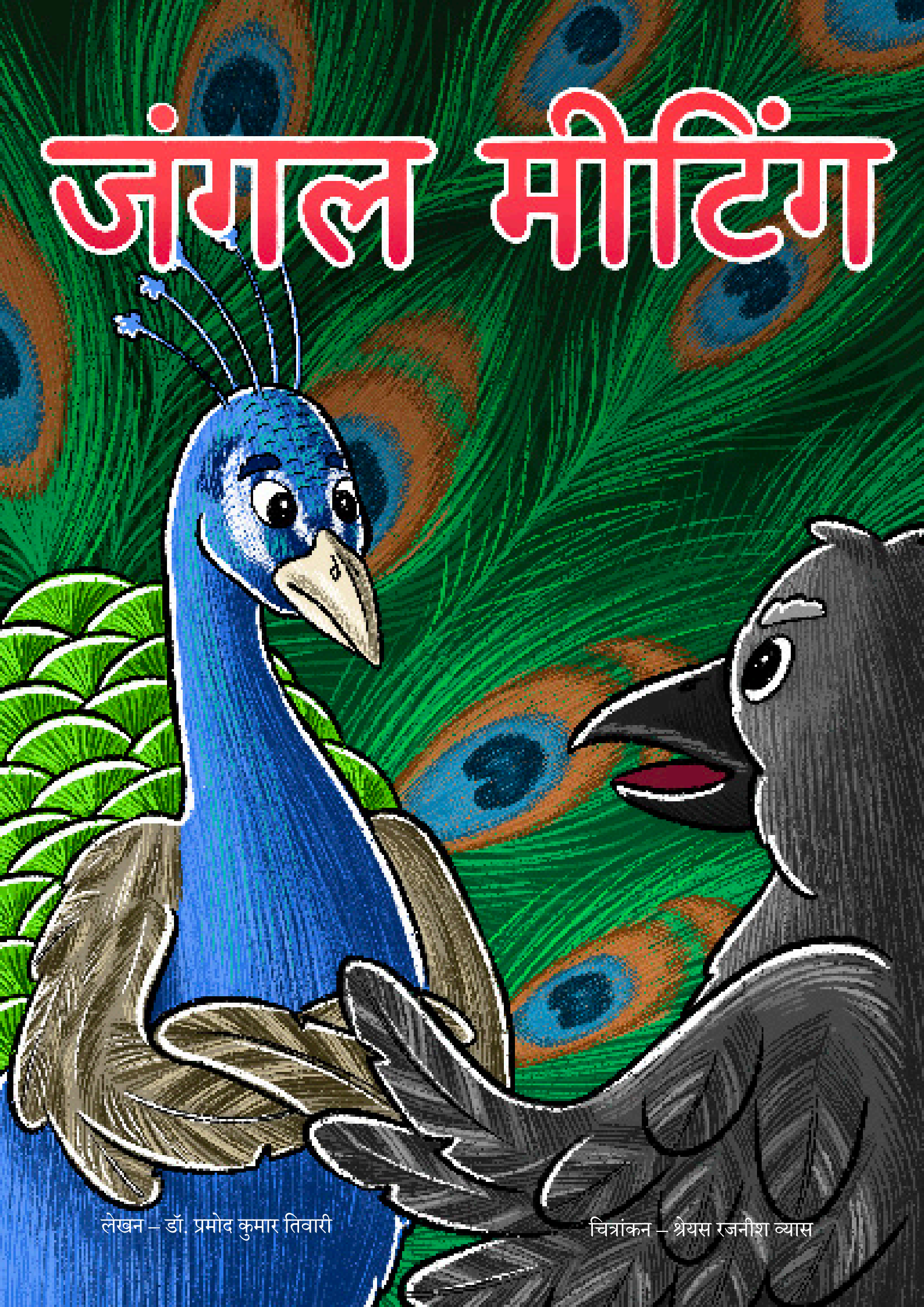

लेखन – डॉ. प्रमोद कुमार तिवारी

चित्रांकन – श्रेयस रजनीश व्यास

# आभार


## कार्यक्रम समन्वयक

प्रो. उषा शर्मा, *प्रोफ़ेसर एवं प्रभारी,*
राष्ट्रीय साक्षरता केंद्र प्रकोष्ठ, एन.सी.ई.आर.टी., दिल्ली

## लेखन

डॉ. प्रमोद कुमार तिवारी

## चित्रांकन

श्रेयस रजनीश व्यास

## मार्गदर्शन

प्रो. नीना सबनानी, *एनिमेटर एवं सहायक संकाय*,
डिज़ाइन विभाग, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, हैदराबाद

## आभार ज्ञापन

श्री श्याम सिंह सुशील, *लेखक*
श्री अक्षय कुमार दीक्षित, *मेंटर,* शिक्षा निदेशालय, दिल्ली प्रशासन, दिल्ली
डॉ. प्रसाद एस ओंकार, *प्रमुख (डिज़ाइन) एवं एसोसिएट प्रोफ़ेसर*, आई.आई.टी., हैदराबाद
प्रो. दीपक जॉन मैथ्यू , *प्रोफ़ेसर* , डिज़ाइन विभाग, आई.आई.टी., हैदराबाद
श्री डेल्विन जूड रेमेडियोज, *सहायक प्रोफ़ेसर*, डिज़ाइन विभाग, आई.आई.टी., हैदराबाद
श्रीमती अंकिता रॉय, *सहायक प्रोफ़ेसर*, डिज़ाइन विभाग, आई.आई.टी., हैदराबाद
डॉ. मोहम्मद शाहिद, *सहायक प्रोफ़ेसर*, डिज़ाइन विभाग, आई.आई.टी., हैदराबाद
डॉ. सौरव देवरी, *सहायक प्रोफ़ेसर*, डिज़ाइन विभाग, आई.आई.टी., हैदराबाद
डॉ. शुहिता भट्टाचार्जी, *सहायक प्रोफ़ेसर*, उदार कला विभाग, आई.आई.टी., हैदराबाद
श्री गौतम गोस्वामी, *सहायक प्रोफ़ेसर*, एनीमेशन एवं मल्टीमीडिया विभाग,
बिरला प्रौद्योगिकी संस्थान, जयपुर
श्री मोहम्मद शाह आलम, *वरिष्ठ परामर्शदाता (आई.सी. टी.)*,
राष्ट्रीय साक्षरता केंद्र प्रकोष्ठ , एन.सी.ई.आर.टी., दिल्ली
सुश्री भावना खेड़ा, *कनिष्ठ परियोजना अध्येता*,
राष्ट्रीय साक्षरता केंद्र प्रकोष्ठ, एन.सी.ई.आर.टी., दिल्ली

उल्लास
ULLAS
जन जन साक्षर
नव भारत साक्षरता कार्यक्रम

# जंगल मीटिंग

**लेखन**

डॉ. प्रमोद कुमार तिवारी

**चित्रांकन**

श्रेयस रजनीश व्यास

विद्यया ऽमृतमश्नुते
एन सी ई आर टी
NCERT
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

सुबह से ही चुलबुल चुहिया और बिट्टू गौरैया को साँस लेने की भी फ़ुर्सत नहीं थी| सबके घर जाकर सबको आज होने वाली मीटिंग के बारे में बताने और सादर आमंत्रित करने का काम इन्हें सौंपा गया था।

पिछले 10 वर्षों में जीव-जंतुओं के जीवन पर इंसानी गतिविधियों के बहुत से दुष्प्रभाव देखने को मिले हैं। भविष्य में इनसे कैसे बचा जाए, इसी बारे में बैठक हो रही थी।

मेरी रोशनी क्या इन्हें कम पड़ रही थी ?

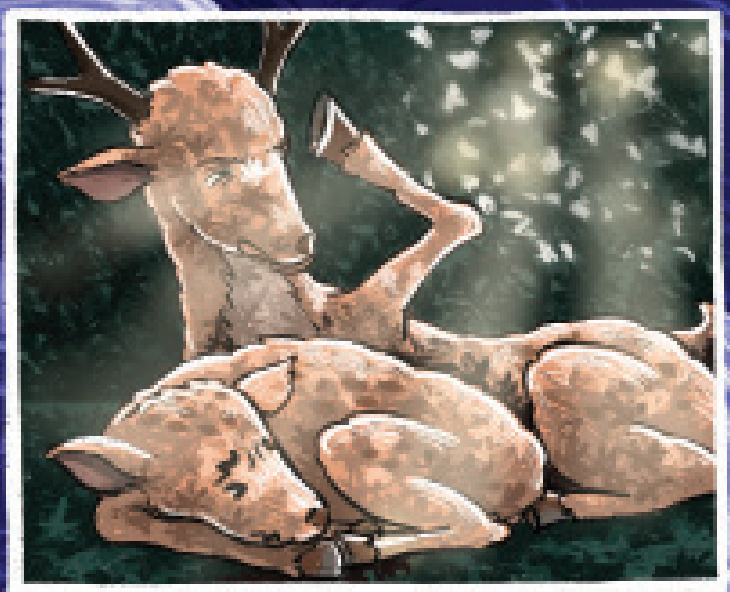

भइया चलिए!

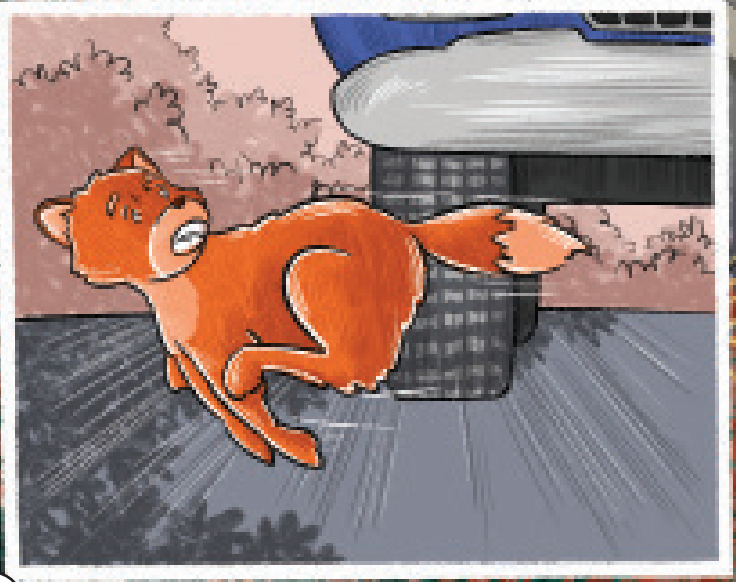

सारे पशु-पक्षियों के आ जाने के बाद मीटिंग शुरू हुई।

ये क्या बात हुई भला? जब हम साथ रहकर अपने सुख-दुःख बाँटते हैं तो मीटिंग अलग अलग क्यों?
इंसानों का यह अत्याचार हम पर भी हो रहा है।
हम सब एक साथ मिलकर योजना बनाएँ तो ही वह सफ़ल होगी।
सड़क की ओर वाली मेरी डाल हमेशा मुरझाई रहती है। पेड़-पौधों और जीवों की समस्या एक है।

पीपल दादा सही कह रहे हैं।
पेड़-पौधों को भी इस मीटिंग में शामिल किया जाएगा।

इनकी बातों को भी एजेंडा में शामिल किया जाए...
... और कार्यवाही को आगे बढ़ाया जाए।

अब मैं मोनू मोर से निवेदन करूँगा कि वह हमें सारी समस्याओं के बारे में बताएँ।

एक-एक करके मोनू मोर ने सब समस्याओं को सबके सामने रखा।

बाँध बनाकर पानी
पर एकाधिकार जमाना।

सड़क पर रात भर
बड़ी-बड़ी बत्तियों का जलना।

रेडिएशन के कारण
जीव-जंतुओं की मृत्यु होना।

धुल और धुएँ का बढ़ना।

वन क्षेत्रफल का लगातार
सिकुड़ते जाना।

फूल और पौधों का मुरझाना।

पानी के प्राकृतिक स्रोतों
का गायब होना।

पेड़ काट कर बड़ी सड़कें बनना।

आप मेरी बात सुनिए। सड़क और कंक्रीट के फ़र्श पर चलना लोहे के चने चबाने जैसा है।

मैंने सुना था जीव दो प्रकार के होते हैं- जूते पहनने वाले और ना पहनने वाले।

और मुझे लगता था मैं दुसरे प्रकार के जीवों में आता हूँ।

लेकिन देखो! इन इंसानों ने मुझे भी जूते पहना दिए।

मेरी मिर्ची का स्वाद अब पहले जैसा बिलकुल नहीं है। लगता है जैसे किसी ने केमिकल मिला दिया हो!
मेरी भी तो सुनो... ये खाने की चीज़ों में मिलावट कब से होने लगी?

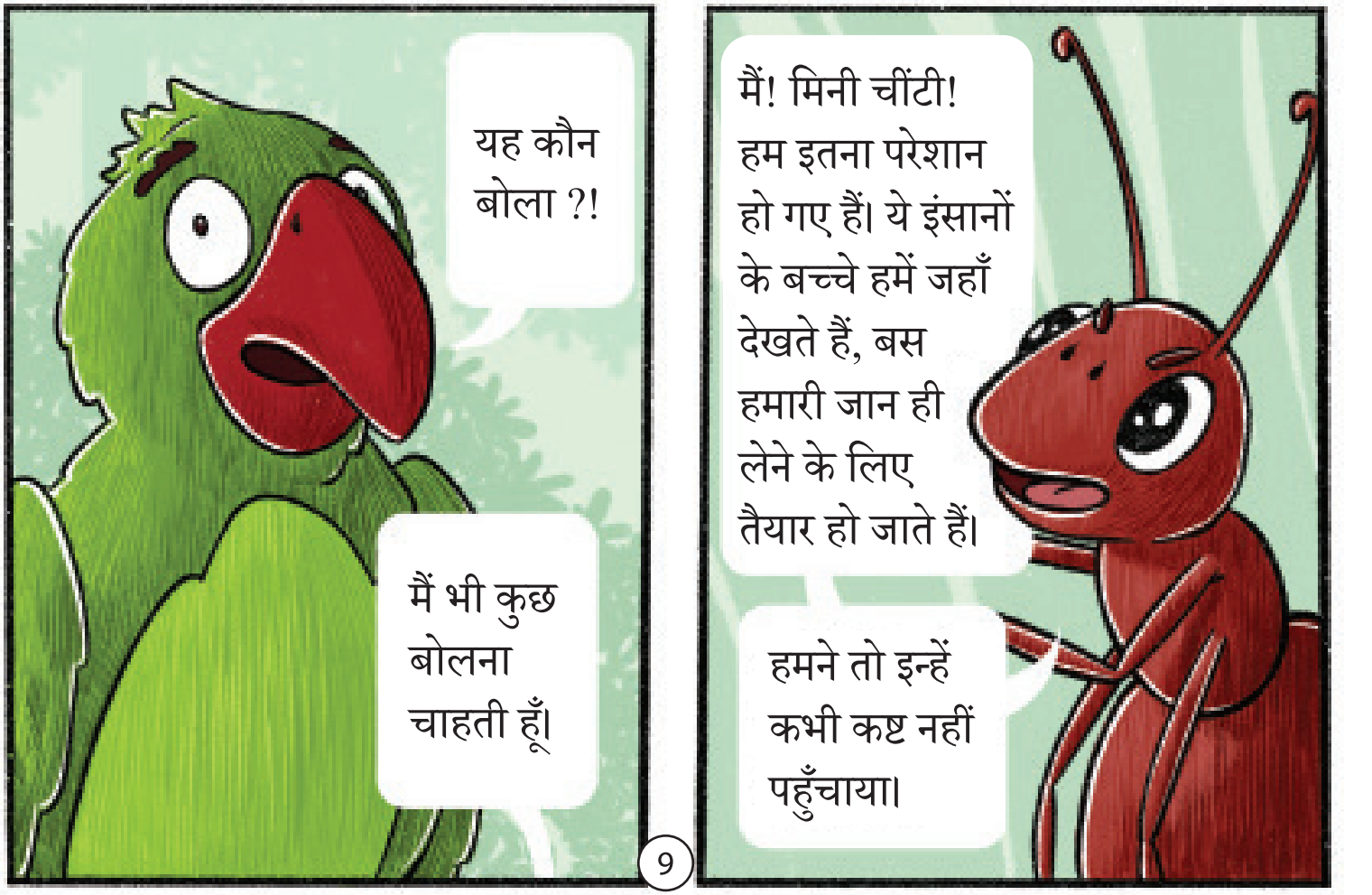
मैं! मिनी चींटी! हम इतना परेशान हो गए हैं। ये इंसानों के बच्चे हमें जहाँ देखते हैं, बस हमारी जान ही लेने के लिए तैयार हो जाते हैं।
हमने तो इन्हें कभी कष्ट नहीं पहुँचाया।
यह कौन बोला ?!
मैं भी कुछ बोलना चाहती हूँ।

मैं देर से आने लिए माफ़ी चाहता हूँ।

ये देखिए! मेरे कितने पंख झड़ने लगे हैं।

मेरे पूर्वजों के साथ ऐसा कभी नहीं हुआ।

मेरी मदद कीजिए।

हे भगवान! कहीं तुम किसी के घर की पानी की मशीन से निकला पानी तो नहीं पीते?

यह मत कहना कि वह पानी दूषित होता है!

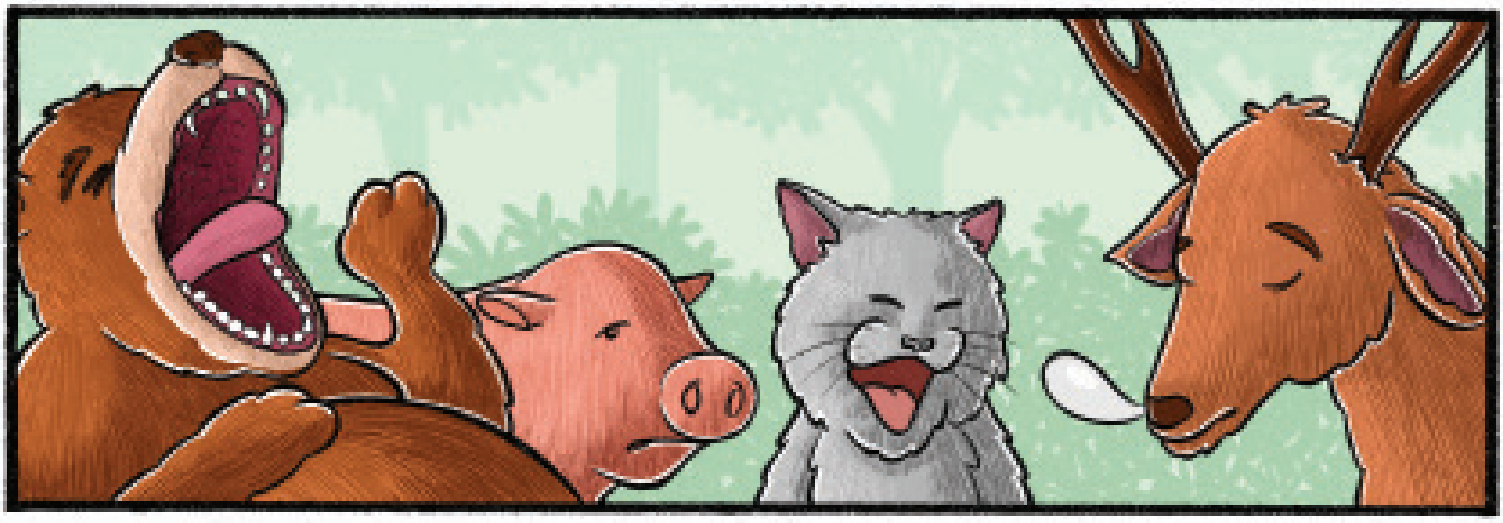

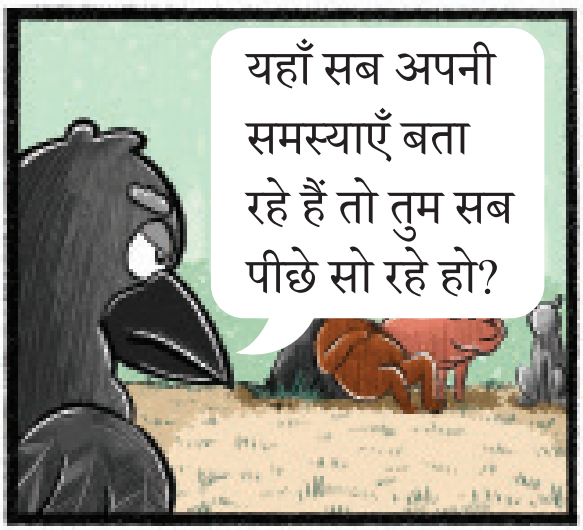

यहाँ सब अपनी समस्याएँ बता रहे हैं तो तुम सब पीछे सो रहे हो?
साथियों, यह बहुत ही गंभीर मुद्दा है। हमें इसपर गहराई से विचार करना होगा।
मैं प्रस्तावित करता हूँ कि इस विषय पर तीन दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित की जाए और उसमें दुनिया भर के विद्वानों को बुलाया जाए।
साथ ही, मनुष्यों को भी बातचीत के लिए आमंत्रित किया जाए।
और इसके साथ ही मुन्नू घोंघे के धन्यवाद प्रस्ताव के बाद मीटिंग ख़त्म हो गई।
आभार

विद्ययाऽमृतमश्नुते

एन सी ई आर टी
NCERT

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING